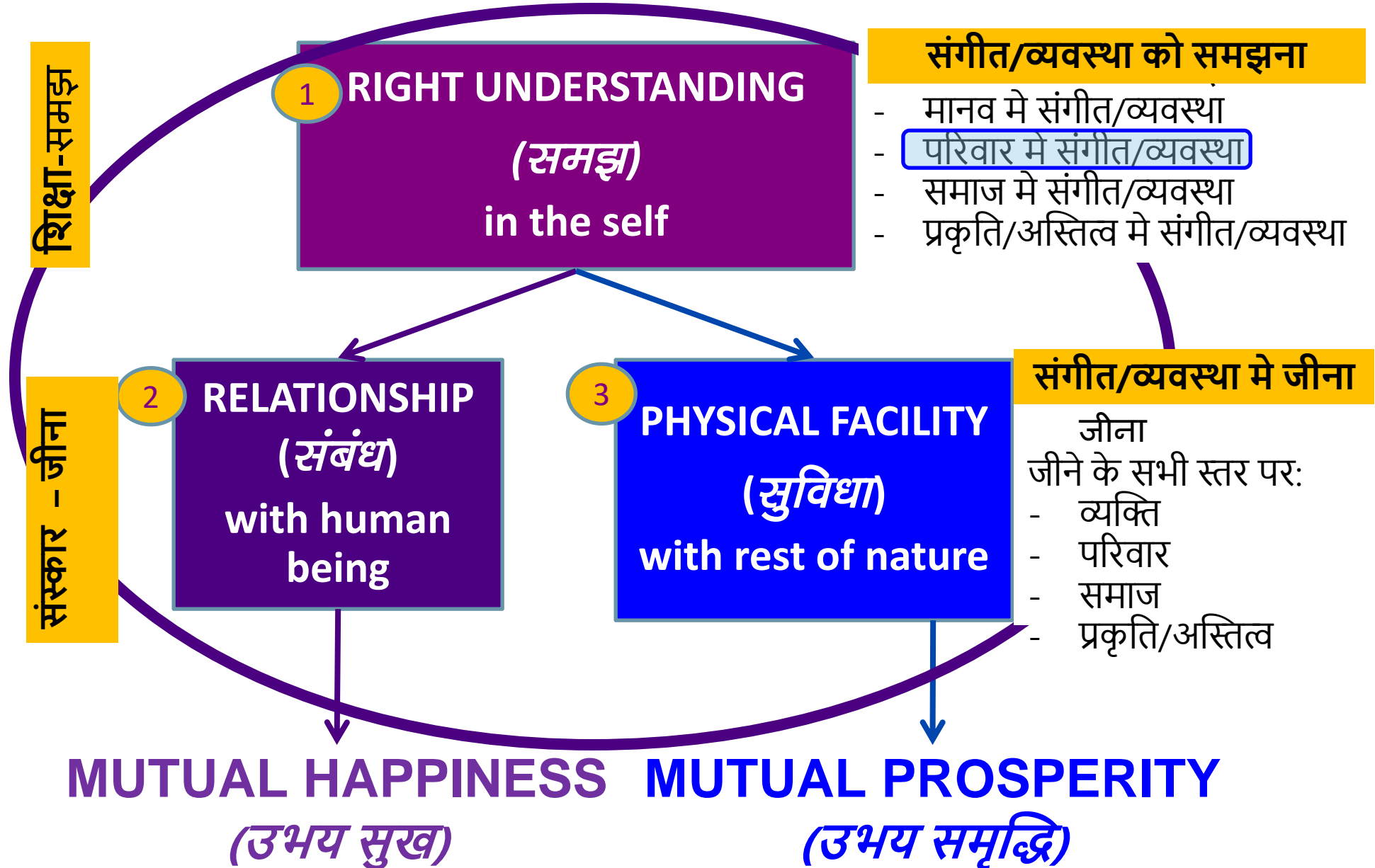




परिवार में व्यवस्था Harmony in the Family

सम्मान
Respect



1. संबंध है – मैं का मैं से
2. संबंध में भाव है – एक मैं (मैं₁) मैं दूसरे मैं (मैं₂) के लिये
3. इन भावों को पहचाना जा सकता है – निश्चित हैं - नौ भाव हैं
4. इनका निर्वाह और मूल्यांकन करने से उभय सुख होता है

संबंध में भाव :

1. विश्वास Trust - आधार मूल्य
2. सम्मान Respect
3. स्नेह Affection
4. ममता Care
5. वात्सल्य Guidance
6. श्रद्धा Reverence
7. गौरव Glory
8. कृतज्ञता Gratitude
9. प्रेम Love - पूर्ण मूल्य

सम्मान Respect

सम्मान = सही आंकलन

Respect = Right Evaluation

सम्मान = सम् + मान

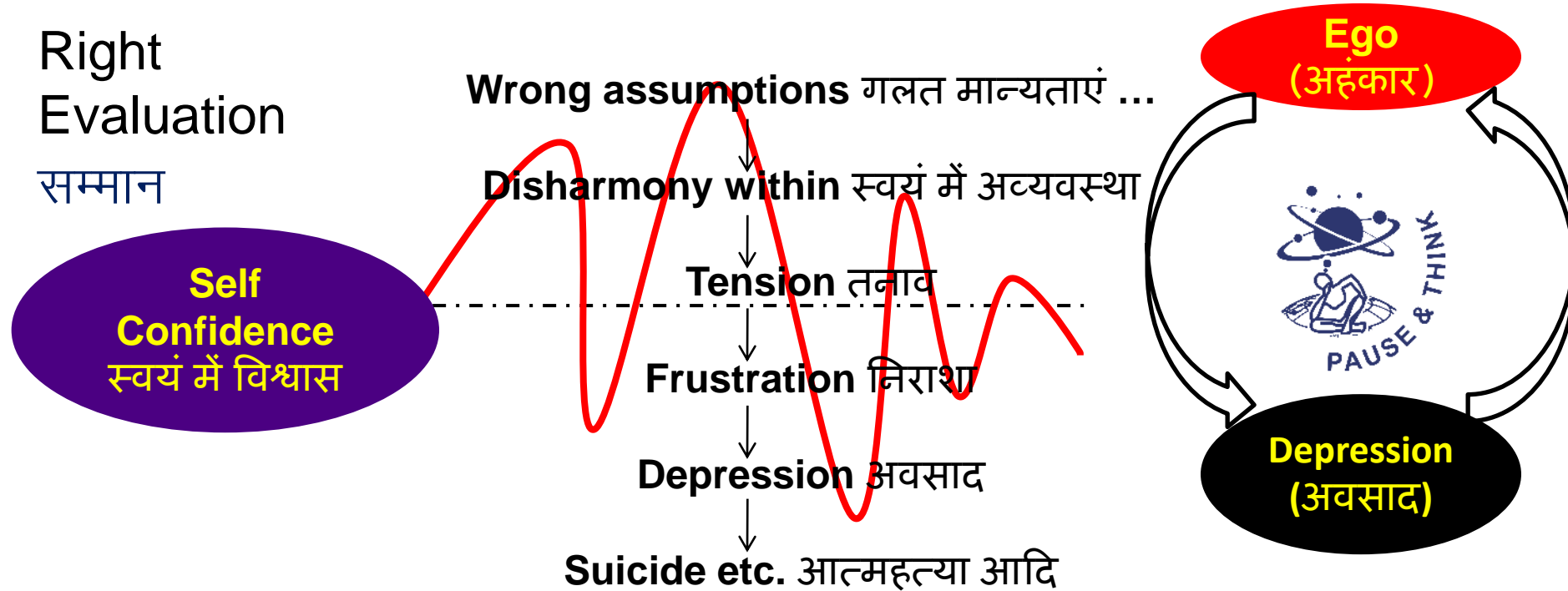
↓ ↓

सम्यक् मापना

↓ ↓

ठीक ठीक आंकलन करना

Over evaluation – evaluating more than what it is
अधिमूल्यन – अधिक आंकलन करना



Under evaluation – evaluating less than what it is
अवमूल्यन – कम आंकलन करना

Otherwise evaluation – evaluating other than what it is
अमूल्यन – अन्यथा आंकलन करना

Respect: Right Evaluation

Will the right evaluation be on the basis of the Self or the Body?



Respect: Right Evaluation – on the basis of the Self

1. Purpose लक्ष्य

- I want to live with continuous happiness & prosperity
- The other also wants to live with continuous happiness & prosperity

Our purpose is same (on the basis of Natural Acceptance)

2. Program कार्यक्रम

- My program is to understand and to live in harmony at all 4 levels
- The program of the other is also to understand and to live in harmony at all 4 levels (Individual, family, society and nature/existence)

Our program is same

3. Potential क्षमता

- Desire, Thought & Expectation (इच्छा, विचार, आशा) is continuous in me.
I am endowed with Natural Acceptance
- Desire, Thought & Expectation (इच्छा, विचार, आशा) is continuous in the other.
The other is also endowed with Natural Acceptance

Our potential is same



MINIMUM CONTENT of RESPECT

The Other is Similar to Me

दूसरा मेरे जैसा है



सम्मान : सही आंकलन – मैं (Self) के आधार पर

1. लक्ष्य Purpose

- मैं निरंतर सुख और समृद्धि पूर्वक जीना चाहता हूँ !
- दूसरा भी निरंतर सुख और समृद्धि पूर्वक जीना चाहता है !

हमारा लक्ष्य समान है (सहज स्वीकृति के आधार पर)

2. कार्यक्रम Program

- सभी 4 स्तरों (व्यक्ति , परिवार, समाज तथा प्रकृति / अस्तित्व) की व्यवस्था को समझना और व्यवस्थापूर्वक जीना मेरे निरंतर सुख और समृद्धि पूर्वक जीने का कार्यक्रम है !
- सभी 4 स्तरों की व्यवस्था को समझना और व्यवस्थापूर्वक जीना दूसरे के निरंतर सुख और समृद्धि पूर्वक जीने का भी कार्यक्रम है !

हमारा कार्यक्रम भी समान है !

3. क्षमता Potential

- मुझमें इच्छा, विचार, आशा (Desire, Thought & Expectation) निरंतर चल रही है ! मैं सहज स्वीकृति से संपन्न हूँ
- दूसरे में भी इच्छा, विचार, आशा (Desire, Thought & Expectation) निरंतर चल रही है ! दूसरा भी सहज स्वीकृति से संपन्न है !

हमारी क्षमता भी समान है !

सम्मान का न्यूनतम भाग



दूसरा मेरे जैसा है

The Other is Similar to Me



Differences

So there are similarities at the level of the self
तो स्वयं के स्तर पर समानताएं हैं

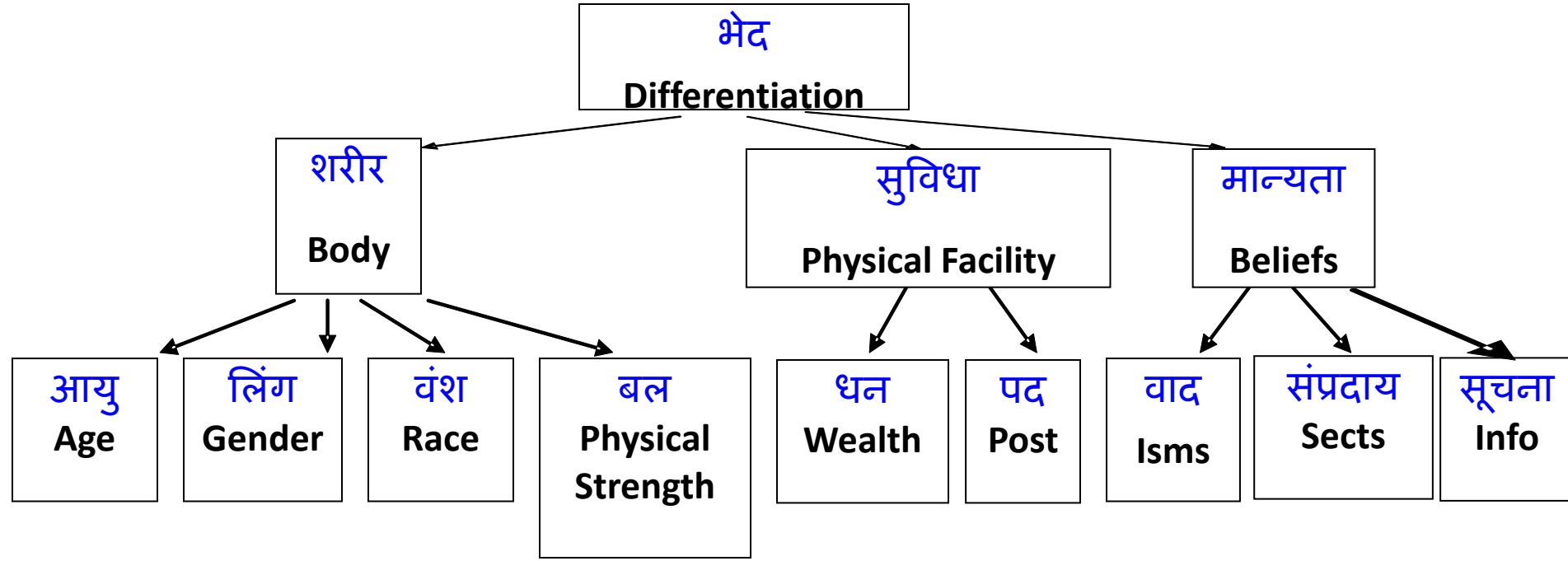
In living, are we:
जीने में, क्या हम :

Trying to accept the other as being similar to me?
दूसरे को अपने जैसा स्वीकार करने का प्रयास करते हैं ?

or अथवा

Trying to show that we are different from the other?
अपने को दूसरे से भिन्न प्रदर्शित करने का प्रयास करते हैं ?





भेद = अपमान

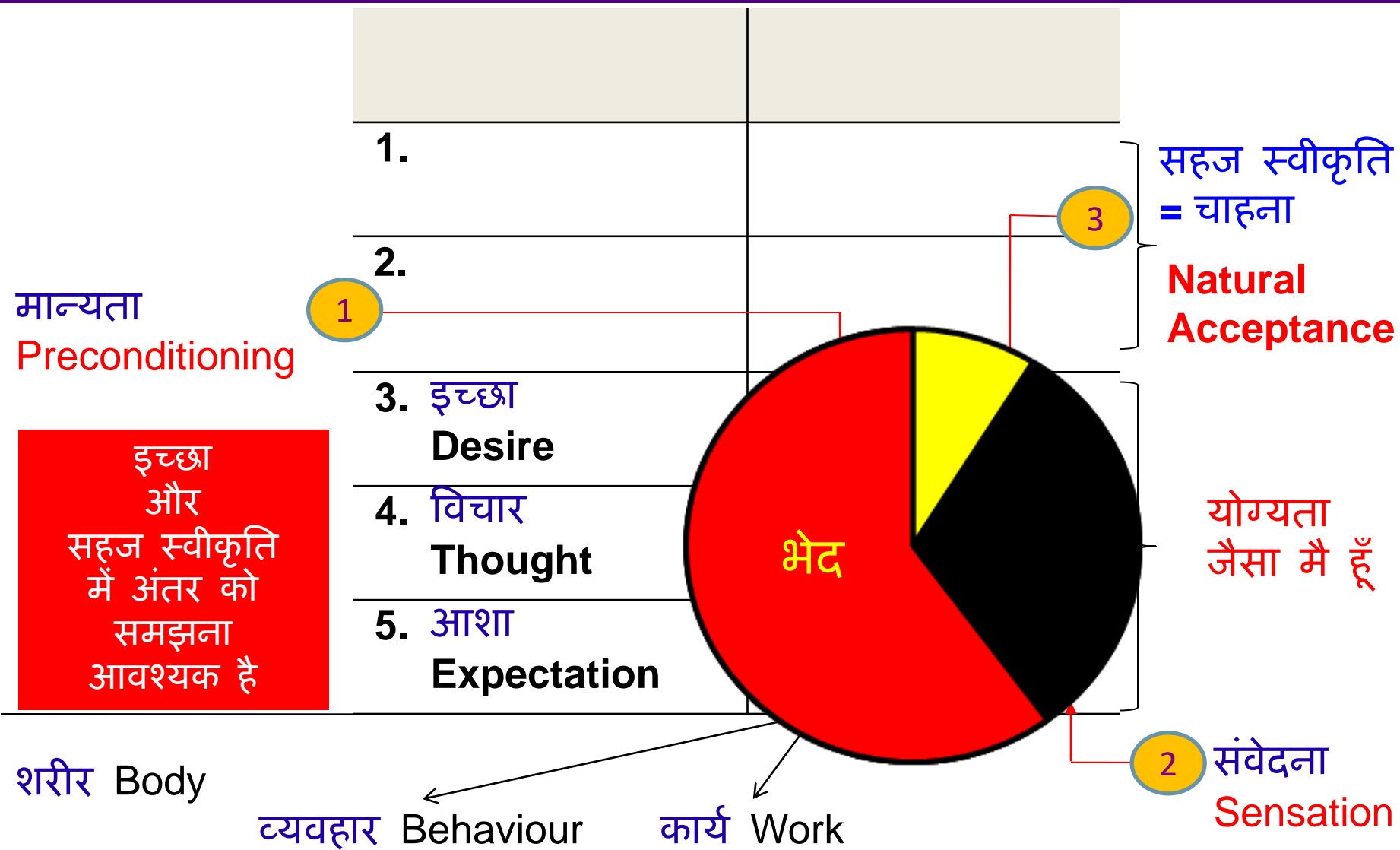
सहज स्वीकार्य नहीं होता..... विरोध, आन्दोलन

Differentiation = Disrespect

Not Naturally Acceptable... Opposition, Movements...



कल्पनाशीलता की स्थिति – बेतरतीब और अव्यवस्थित



Respect: Right Evaluation – on the basis of the Self

1. Purpose लक्ष्य

- I want to live with continuous happiness & prosperity
- The other also wants to live with continuous happiness & prosperity

Our purpose is same (on the basis of Natural Acceptance)

2. Program कार्यक्रम

- My program is to understand and to live in harmony at all 4 levels
- The program of the other is also to understand and to live in harmony at all 4 levels (Individual, family, society and nature/existence)

Our program is same

3. Potential क्षमता

- Desire, Thought & Expectation (इच्छा, विचार, आशा) is continuous in me.
I am endowed with Natural Acceptance
- Desire, Thought & Expectation (इच्छा, विचार, आशा) is continuous in the other.
The other is also endowed with Natural Acceptance

Our potential is same

MINIMUM CONTENT of RESPECT ↓

The Other is Similar to Me

दूसरा मेरे जैसा है

सम्मान : सही आंकलन – मैं (Self) के आधार पर

1. लक्ष्य Purpose

- मैं निरंतर सुख और समृद्धि पूर्वक जीना चाहता हूँ !
- दूसरा भी निरंतर सुख और समृद्धि पूर्वक जीना चाहता है !

हमारा लक्ष्य समान है (सहज स्वीकृति के आधार पर)

2. कार्यक्रम Program

- सभी 4 स्तरों (व्यक्ति , परिवार, समाज तथा प्रकृति / अस्तित्व) की व्यवस्था को समझना और व्यवस्थापूर्वक जीना मेरे निरंतर सुख और समृद्धि पूर्वक जीने का कार्यक्रम है !
- सभी 4 स्तरों की व्यवस्था को समझना और व्यवस्थापूर्वक जीना दूसरे के निरंतर सुख और समृद्धि पूर्वक जीने का भी कार्यक्रम है !

हमारा कार्यक्रम भी समान है !

3. क्षमता Potential

- मुझमें इच्छा, विचार, आशा (Desire, Thought & Expectation) निरंतर चल रही है !
मैं सहज स्वीकृति से संपन्न हूँ
- दूसरे में भी इच्छा, विचार, आशा (Desire, Thought & Expectation) निरंतर चल रही है !
दूसरा भी सहज स्वीकृति से संपन्न है !

हमारी क्षमता भी समान है !

सम्मान का न्यूनतम भाग



दूसरा मेरे जैसा है

The Other is Similar to Me

Respect: Right Evaluation – on the basis of the Self

1. Purpose – Our purpose (Natural Acceptance) is same
2. Program – Our program is same
3. Potential – Our potential is same

The Other is Similar to Me

4. Competence – On the basis of right evaluation of our mutual competence, I recognise our complementarity and fulfill it:

If the other has more understanding, is more responsible than me

- I am committed to understand from the other

If I have more understanding, I am more responsible than the other

1. I live with responsibility with the other, unconditionally, unperturbed by the behaviour of the other
2. I am committed to facilitate understanding in the other (once the other is assured in relationship, and not before that)

↓ COMPLETE CONTENT of RESPECT

The Other is Similar to Me. We are complementary to each other

सम्मान : सही आंकलन – मैं (Self) के आधार पर

1. लक्ष्य – हमारा लक्ष्य समान है (सहज स्वीकृति)
2. कार्यक्रम – हमारा कार्यक्रम समान है !
3. क्षमता – हमारी क्षमता समान है !

दूसरा मेरे जैसा है !

4. योग्यता – अपनी परस्पर योग्यता के सही आंकलन के आधार पर मैं अपनी पूरकता को पहचानता हूँ और उसका निर्वाह करता हूँ :

यदि दूसरा मुझसे अधिक समझदार और अधिक जिम्मेदार है तो

– मैं दूसरे से समझने को तत्पर रहता हूँ !

यदि मैं दूसरे से अधिक समझदार और अधिक जिम्मेदार हूँ तो

1. मैं दूसरे के साथ जिम्मेदारीपूर्वक जीता हूँ बिना उसके व्यवहार से प्रभावित हुये और बिना किसी शर्त के !
2. मैं दूसरे को समझने में सहयोग करने के लिये तत्पर रहता हूँ (एक बार दूसरा संबंध में आश्वस्त हो जाए तब, उससे पहले नहीं)

पूर्ण सम्मान



दूसरा मेरे जैसा है ! हम एक दूसरे के पूरक हैं !



आपके विचार **Self Reflection**